जैन
# पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

**नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक**

15 मार्च - ऋषभदेव जयन्ती

तीर्थंकर ऋषभदेव तीर्थ प्रवर्तक होने के साथ-साथ युग प्रवर्तक भी है; हमें यह बात भी नहीं भूलना चाहिये।

ह्न पंचकल्याणक प्र.महोत्सव

वर्ष : 26, अंक : 24 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये

मार्च (द्वितीय) 2004 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये, एकप्रति : 2/-

## सम्पूर्ण देश में अष्टाह्निका पर्व सानन्द सम्पन्न

**1. जयपुर (राज.) :** यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में अष्टाह्निका पर्व के उपलक्ष्य में दिनांक 28 फरवरी से 6 मार्च 2004 तक श्री पंचमेरु नन्दीश्वर मण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री, बण्डा ने सम्पन्न कराये ।

इस अवसर पर पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के प्रात: पंचास्तिकाय संग्रह पर एवं रात्रि में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनसार के ज्ञानतत्त्व प्रज्ञापन अधिकार पर मार्मिक प्रवचन हुए। इसके अतिरिक्त अनेक धार्मिक कक्षाओं का भी आयोजन किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम में महाविद्यालय के उपाध्याय कनिष्ठ के छात्रों का विशेष सहयोग रहा।

**2. मुम्बई :** श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल बृहन्मुम्बई के संयोजकत्व में मुम्बई के विभिन्न उपनगरों में निम्नानुसार धर्म प्रभावना हुई ह्न

श्री सीमन्धर जिनालय **जबेरी बाजार** में पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, **दादर** में पण्डित सुशीलकुमारजी राधौगढ़, **घाटकोपर** में पण्डित शिखरचन्दजी जैन विदिशा, **मलाड** में पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, **बोरीवली** में पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन बिजौलिया, **भायंदर** में वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, **दहीसर** में पण्डित कमलचन्दजी जैन पिड़ावा के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ स्थानीय समाज को प्राप्त हुआ।

**3. अजमेर (राज.) :** यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री सीमन्धर जिनालय में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर श्री समयसार मण्डल विधान का भव्य आयोजन किया गया। ध्वजारोहण श्री समीरकुमारजी जैन परिवार दिल्ली ने तथा विधान का उद्घाटन श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी परिवार किशनगढ़ ने किया।

इस अवसर पर प्रतिदिन आत्मार्थी पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर के दोपहर एवं रात्रि में ग्रन्थाधिराज समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में सी.डी. प्रवचन तथा रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति होती थी।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य श्री हीराचन्दजी बोहरा के निर्देशन में पण्डित सुनीलजी 'धवल', पण्डित अनिलजी 'धवल' भोपाल एवं पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर ने सम्पन्न कराये। **ह्न विजयकुमार जैन**

**4. शिरडशहापुर (महा.) :** यहाँ श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर पण्डित प्रशान्तकुमारजी काले के प्रात: योगसार ग्रन्थ पर सारगर्भित प्रवचन हुए।

दोपहर में पण्डित रमेशचन्दजी महाजन द्वारा तत्त्वचर्चा एवं रात्रि में पण्डित प्रेमचन्दजी महाजन द्वारा अष्टपाहुड़ ग्रन्थ के सूत्रपाहुड़ पर मार्मिक व्याख्यान हुए तथा श्री नाभिराजजी महाजन द्वारा बालकक्षा, सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं पूजन-विधान के कार्यक्रम कराये गये।

ज्ञातव्य है कि यहाँ पण्डित प्रशान्तकुमारजी शास्त्री द्वारा विभिन्न धार्मिक अवसरों पर विशेष प्रवचनों के अतिरिक्त दैनिक स्वाध्याय, तत्त्वचर्चा आदि के माध्यम से समाज में विशेष जागृति आयी है। **ह्न सुरेश काले**

**5. वैर (भरतपुर) :** यहाँ श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में अष्टाह्निका पर्व पर श्री शान्ति विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित अनुपमजी जैन, अमायन के मोक्षमार्गप्रकाशक एवं पण्डित सचिन्द्रजी जैन, गढ़ाकोटा के पूजन का स्वरूप विषय पर प्रवचन हुए। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य भी उक्त विद्वानों ने ही सम्पन्न कराये ।

**6. दिल्ली (छावनी) :** यहाँ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री, डडूका ने सम्पन्न कराये। इस अवसर पर पण्डित आशीषजी शास्त्री, टीकमगढ़ के रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार से स्वाध्याय की महिमा विषय पर प्रवचन हुए।

---

## हार्दिक बधाई !

1. श्री टोडरमल दि.जैन सि.महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक गणतंत्र जैन, खरगापुर को राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान भोपाल में आयोजित ध्वनि अनुकरण प्रतियोगिता में प्रथम एवं संस्कृत श्लोक अन्ताक्षरी में द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर श्रीमती अलका जैन राज्य स्कूल एवं उच्च शिक्षामंत्री म.प्र. शासन तथा बरकतुल्ला विश्वविद्यालय के कुलपति एवं विद्यापीठ के प्राचार्य श्री आजादजी मिश्र द्वारा प्रमाणपत्र एवं पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

2. अखिल भारतीय निबन्धस्पर्धा बृहन्महाराष्ट्र मण्डल नई दिल्ली द्वारा आयोजित निबन्ध स्पर्धा में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के छात्र रवीन्द्रकुमार काले ने प्रथम, सतीश बोरालकर ने द्वितीय एवं किशोर धोंगडे ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

सभी प्रतिभाओं को जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

सम्पादकीय –

# पञ्चास्तिकाय परिशीलन

**5**

ह्न रतनचन्द भारिल्ल

**(गतांक से आगे...)**

जो पंचास्तिकाय की राग-द्वेष रहित यथार्थ अक्षर, पद और वाक्य की द्रव्यश्रुतरूप रचना करता है, उसे शब्दसमय कहते हैं। जीव शब्द बोला इसमें 'जी' और 'व' ये दो अक्षर हैं। जीव यह पद है और 'जीव अनादि-अनन्त है' यह वाक्य है। इसप्रकार अक्षर, पद और वाक्य की रचना को द्रव्यश्रुत कहा है। राग-द्वेष रहित जो शब्द कहा है, उसके ऊपर खास वजन है। जिस शास्त्र में राग-द्वेष रहित होने के लिए लिखा जाता है, वही यथार्थ शास्त्र है और वही शब्दसमय है।

**जिसमें वीतरागता की बात आती है, जो अपने आत्मा को लाभ का उपाय बताता है। जो यह बताता है कि ''सभी आत्मायें और परमाणु स्वतंत्र हैं, उन सभी के द्रव्य, गुण, पर्याय भी स्वतंत्र हैं, कर्म राग नहीं कराता है; परन्तु स्वयं राग करता है तो राग होता है और स्वभाव के आश्रय से मिथ्यात्व-राग-द्वेष नष्ट होकर धर्म होता है ह्न इत्यादि रूप से यथार्थ लेखन जिसमें होता है, उसे शब्दसमय कहते हैं।** द्रव्यश्रुत कहो, द्रव्य आगम कहो, शब्दसमय कहो सब एक ही है।

**प्रश्न :ह्न** शब्दपर्याय तो जड़ है; उसे रागरहितपना कैसे कहा ?

**उत्तर :ह्न** ''गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने इसका जो समाधान इसप्रकार किया है, उसका भाव इसप्रकार है ह्न ''यद्यपि वह पुद्गल की पर्याय है; परन्तु शब्दसमय द्वारा जो कहा है, उसका भाव समझकर जीव अपने में मिथ्यात्वरहित यथार्थ ज्ञान करता है, वही शब्द का राग रहितपना है। जैसा कि शब्दसमय में लिखा आता है कि जीव अपने आश्रय से मिथ्यात्व, राग और द्वेष का नाश कर सकता है। इस कथन का यथार्थ भाव समझकर धर्मी जीव अपने आश्रय से मिथ्यात्व, राग और द्वेष का नाश करता है और ज्ञानसमय अपने में प्रगट करता है अथवा निमित्त के, व्यवहार के कथन आते हैं तो उन्हें उपचार कथन समझकर वीतरागता निकालता है अर्थात् जैसा शब्दसमय में भाव कहा था, वैसा ही वह ज्ञान करता है; अतः शब्दसमय मिथ्यात्व, राग और द्वेष का नाश करता है। जिन शब्दों द्वारा ऐसे राग-द्वेष के नाश होने का ऐसा कथन किया जाता है। वही शब्दसमय का राग रहितपना है।

पंचास्तिकाय में पाँच अस्तिकाय ह्न जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म और आकाश का वर्णन है। वे सभी द्रव्य स्वतंत्र हैं, उनको कहनेवाले शब्दों को शब्दसमय कहते हैं। यहाँ उन शब्द समयवाले शब्दों की ओर का लक्ष छोड़ने के लिये तथा उनके द्वारा कहे गये अर्थसमय पर ध्यान केन्द्रित करने को कहते हैं।''

वास्तव में तो अपने ज्ञानस्वभाव में एकाग्र होने पर मिथ्यात्व, राग और द्वेष उत्पन्न होते ही नहीं हैं, इसी को मिथ्यात्व, राग और द्वेष का नाश हो गया ह्न ऐसा कहा जाता है। इसप्रकार अपने में सच्चा ज्ञान प्रगट होना ज्ञानसमय है। ज्ञानसमय कहो, भावश्रुतज्ञान कहो, भाव आगम कहो ह्न यह सब एक ही है। वह सम्यग्ज्ञानी जीव के प्रगट करता है तो जैसा शास्त्र का कहना था, वैसा ही उसने किया, अतः शब्दसमय द्वारा ज्ञान हुआ, ऐसा कहा जाता है।

सम्यग्ज्ञान द्वारा जो पदार्थ जाने जाते हैं, उसका ज्ञान अर्थसमय है। अर्थसमय या पदार्थसमय दोनों एक ही हैं। शब्द वाचक हैं और पदार्थ वाच्य है। यहाँ अर्थसमय की व्याख्या स्पष्ट है कि ज्ञान द्वारा जो पदार्थ जाना गया, उसे अर्थसमय कहते हैं। स्वभाव के आश्रय से मिथ्यात्व का नाश होकर जो सम्यग्ज्ञान उत्पन्न हुआ, वह ज्ञान ही पदार्थों को यथार्थ जानता है।

ध्यान रहे ज्ञान ज्ञेयों से अर्थात् पदार्थों से ज्ञान नहीं होता। 'पंचास्तिकाय' इस शब्दसमय से भी ज्ञान नहीं होता; ज्ञानसमय में अर्थसमय तथा शब्दसमय स्वत: ज्ञात हो जाते हैं। पंचास्तिकाय पदार्थ सम्यग्ज्ञान द्वारा ज्ञात होते हैं। पदार्थों से तथा शब्दसमय से पंचास्तिकाय का ज्ञान नहीं होता। आत्मा ज्ञानस्वभावी है ह्न ऐसा ज्ञान-श्रद्धान होने पर सम्यग्ज्ञान प्रगट होता है और वह सम्यग्ज्ञान शब्दसमय का भाव तथा पदार्थों को जान लेता है।

ज्ञानसमय बिना शब्दसमय और अर्थसमय का यथार्थज्ञान होता ही नहीं है। संक्षेप में कहें तो ज्ञानी जब स्वयं सम्यग्ज्ञान प्रगट करता है, तब आगम तथा पदार्थों को यथार्थ जाना कहा जाता है।

अर्थसमय के दो भेद हैं ह्न १. पंचास्तिकायसमूहरूप लोक, २. अकेला आकाशरूप अलोक।

अर्थसमय में पंचास्तिकाय को लोक कहा है। काल अस्ति है, उसका लोक में अभाव नहीं है; परन्तु वह अस्तिकाय नहीं है। परमाणु एक होने पर भी रूखा-चिकने रूप योग्यता के कारण उपचार से अस्तिकाय कहलाता है, जबकि कालाणु में ऐसी रूखे चिकने की योग्यता नहीं है; क्योंकि उसमें स्पर्श गुण ही नहीं है, अतः वह उपचार से भी अस्तिकाय नहीं कहलाता है। फिर भी वह लोक में शामिल है।

भावश्रुतज्ञान की एकसमय की पर्याय में अनन्तद्रव्यों को, अनन्तक्षेत्र को, अनादि-अनन्त काल को तथा अनन्त भावों को परोक्ष जानने की ताकत है।

अर्थसमय में लोकालोक आ गया। अर्थसमय का क्षेत्र लोकालोक जितना है और ज्ञानसमय की अथवा भावश्रुतज्ञान की व्यापकता मात्र

**शेष पृष्ठ 5 पर...**

तार : त्रिमूर्ति फोन : 2707458, 2705581, (Fax) 2704127, E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

(श्री कुन्दकुन्द कहान दि. तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा संचालित)

# श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

यहाँ पासपोर्ट साइज का नवीनतम फोटो लगावें।

## प्रवेश प्रार्थना-पत्र

**( नोट : प्रार्थना-पत्र प्रार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये। सभी पूर्तियाँ सही-सही व पूरी होनी चाहिये।)**

कक्षा ................ सत्र ................

नाम छात्र ....................................... पिता का नाम श्री ................................................ स्थान ...............

आयु ......... जन्म तिथि .................पिता या संरक्षक की आजीविका (व्यापार)..................... मासिक आय ....................

परिवार में कितने व्यक्ति हैं ? ............ भाई ................बहिन ........... अन्य ...................................................

कभी आपको कोई बड़ी बीमारी हुई हो या अभी हो तो विवरण दें .........................................................................

मातृभाषा ................................ कोई अन्य भाषा जिसका ज्ञान हों .............................................................

विद्यालय का नाम जहाँ से अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण की है ......................................................................................

बोर्ड/विश्वविद्यालय का नाम (अन्तिम परीक्षा दी हो)...............................................................................

अंतिम परीक्षा के लिये हुए विषय 1. .......... 2. ............ 3. ............4. ............. 5............ परिणाम ...... प्रतिशत......

धार्मिक परीक्षा दी हो तो उसका विवरण दें (प्रमाणपत्र संलग्न करें) ..........................................................

मैंने विद्यालय एवं छात्रावास के प्रवेश संबंधी नियमों को पढ़कर समझ लिया है। मैं उनका तथा समय-समय पर संशोधित, परिवर्द्धित, परिवर्तित नियमों व अन्य दी गई सूचनाओं का पूर्ण रीति से पालन करूँगाा यदि इसके विरुद्ध चलूँ या अनुशासन भंग करूँ या संस्था के हित में बाधक समझा जाऊँ या परीक्षा में अनुत्तीर्ण रहूँ तो मुझे संस्था से पृथक् करने तक का दण्ड दिया जा सकता है, वह मुझे बिना आपत्ति किये मान्य होगा। मुझे विद्यालय एवं छात्रावास में प्रवेश दिया जाये।

पत्र-व्यवहार का पूरा पता : ................................................ हस्ताक्षर छात्र

................................................ दिनांक .............

पिनकोड ..................... फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) ...........................

### पिता या संरक्षक द्वारा भरा जाय

1. यह छात्र रिश्ते में मेरा .................................... है। 2. मुझे विद्यालय एवं छात्रावास के सम्पूर्ण नियम स्वीकार हैं।

मैं स्वेच्छा से इस छात्र को प्रवेश दिलाना चाहता हूँ तथा प्रमाणित करता हूँ कि छात्र का उपर्युक्त लिखना सही है। यह संस्था के वर्तमान नियमों, समय-समय पर बनने वाले अन्य नियमों, सूचनाओं और अनुशासन का बराबर पालन करेगा तथा विरुद्ध चलने पर अधिकारियों द्वारा दिया हुआ दण्ड मान्य करेगा। छात्र की सभी गतिविधियों के लिए मैं जिम्मेदार रहूँगा।

नाम व पूरा पता : ..................................................... हस्ताक्षर (पिता या संरक्षक)

..................................................... दिनांक ...............

### छात्र के निवास स्थान के दो प्रतिष्ठित व्यक्तियों का प्रमाणीकरण

हम प्रमाणित करते हैं कि छात्र और उसके पिता या संरक्षक ने जो ऊपर लिखा है वह सही है। छात्र विद्यालय और छात्रावास में प्रविष्ट होने योग्य है।

नाम .......................................... नाम ..........................................

पता .......................................... पता ..........................................

.......................................... ..........................................

हस्ताक्षर हस्ताक्षर

दिनांक ................. दिनांक .................

**नोट :** प्रवेश संबंधी आवश्यक नियम कृपया पीछे देखें। अन्तिम परीक्षा से आशय उस परीक्षा से है जिसके बाद आप विद्यालय में प्रवेश लेना चाहते हैं।

# प्रवेश सम्बन्धी आवश्यक नियम

1. विद्यालय एवं छात्रावास में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर (राजस्थान) के जैनदर्शन सहित उपाध्याय पाठ्यक्रम (हायर सैकण्डरी समकक्ष) एवं राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर के जैनदर्शन शास्त्री पाठ्यक्रम (तीन वर्षीय स्नातक बी.ए. समकक्ष) में अध्ययन हेतु दिगम्बर जैनधर्म में श्रद्धा रखने वाले छात्रों को प्रवेश दिया जाता है।

2. महाविद्यालय का सत्र जून के अन्तिम सप्ताह से आरम्भ होता है। प्रत्येक वर्ष के लिए नया प्रवेश लेना आवश्यक है। कृपांक (ग्रेस) से उत्तीर्ण छात्रों का प्रवेश नहीं हो सकेगा।

3. प्रवेश प्रार्थना-पत्र 30 अप्रैल तक जयपुर कार्यालय में जमा किया जा सकता है।

4. उपाध्याय कक्षा में प्रवेश हेतु सैकण्डरी (10वीं बोर्ड) या उसके समकक्ष या उच्च परीक्षा पास छात्र ही प्रवेश पा सकेंगे। सैकण्डरी परीक्षा में सम्पूर्ण विषय (हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान) सहित उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

5. प्रवेश हेतु साक्षात्कार के लिए छात्र को पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित ग्रीष्मकालीन शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में पूरे दिन उपस्थित रहकर प्रशिक्षण प्राप्त करना आवश्यक है। **इस वर्ष यह शिविर दिनांक 9 मई से 26 मई तक देवलाली (नासिक) महाराष्ट्र में आयोजित होगा।**

6. प्रवेश की स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना छात्र को जून के अंतिम सप्ताह से पूर्व भेज दी जावेगी। संस्था अस्वीकृति का कारण बताने को बाध्य नहीं है।

7. छात्र को विद्यालय द्वारा निर्दिष्ट दिनचर्या का पालन करना व उपरोक्त पाठ्क्रम के साथ विद्यालय द्वारा निर्धारित धार्मिक पाठ्यक्रम पढ़ना अनिवार्य है।

8. प्रत्येक छात्र को प्रतिदिन देवदर्शन करने, छना हुआ पानी पीने, रात्रि भोजन त्याग करने, धूम्रपान नहीं करने, पान, तंबाकू-गुटखा तथा लहसुन, प्याज, आलू आदि अभक्ष्य पदार्थ नहीं खाने का नियम रखना होगा। छात्रावास में खाना बनाना, ताश, जुआ खेलना निषिद्ध है।

9. छात्र अपने अतिथि को पूर्व स्वीकृति प्राप्त करके ही निर्दिष्ट स्थान पर ठहरा सकेंगे।

10. छात्र को सम्बन्धित अधिकारियों द्वारा निर्दिष्ट स्थान पर ही रहना आवश्यक होगा। अपनी इच्छा से स्थान परिवर्तन नहीं किया जा सकेगा, छात्र अपने कमरे में धार्मिक वातावरण रखेंगे, अपने कमरे व उसके आस-पास के स्थान को स्वच्छ रखेंगे व बाथरूम आदि में गंदगी नहीं करेंगे।

11. प्रत्येक कमरे में छात्र द्वारा ट्यूब लाईट एवं पंखे के अलावा बिजली का हीटर, सिगड़ी, रेडियो, टेप आदि का प्रयोग करना दण्डनीय अपराध होगा।

12. कोई भी छात्र नकदी या अन्य जोखिम अपने पास नहीं रखेगा, अन्यथा खो जाने पर उसकी स्वयं की ही जिम्मेदारी होगी। नकदी आदि कार्यालय आदि में जमा कराके रसीद प्राप्त कर लेनी चाहिए।

13. किसी भी कारण से छात्रावास से बाहर जाने हेतु संबंधित अधिकारी से अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है। सत्र के बीच में अवकाश पर जाने के लिए प्रार्थना-पत्र देकर तीन दिन पूर्व लिखित स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक है। ग्रीष्मावकाश में कोई भी छात्र बिना अनुमति छात्रावास में नहीं रह सकेगा।

14. धार्मिक अध्ययन से प्रत्यक्ष में उपेक्षा दिखाने वाले, बिना पर्याप्त कारण के परीक्षा में अनुपस्थित रहने वाले या अनुत्तीर्ण रहने वाले, अनुशासन भंग करने वाले छात्रों को बिना किसी पूर्व सूचना के तत्काल छात्रावास से निष्कासित किया जा सकेगा। वार्षिक परीक्षामें पास न होने वालों को सामान्यत: अगले वर्ष छात्रावास में प्रवेश नहीं मिलेगा। इस बारे में विद्यालय एवं छात्रावास अधिकारी का निर्णय ही अंतिम होगा व उसके लिए अपने निर्णय का कारण बताना आवश्यक नहीं होगा।

15. उपरोक्त नियमों के अतिरिक्त समय-समय पर संशोधित, परिवर्द्धित एवं परिवर्तित नियमों का एवं अन्य आदेशों का छात्र को पूणरुपेण पालन करना होगा; इसका उल्लंघन करने पर जो दण्ड अधिकारी देंगे वह छात्र को सर्वथा मान्य होगा।

**उपर्युक्त नियम हमें पूर्ण मान्य हैं।**

**हस्ताक्षर छात्र** .................. **हस्ताक्षर पिता/संरक्षक** ....................

## प्रवेश प्रक्रिया

1. प्रवेश प्रार्थना-पत्र छात्र स्वयं भरकर माध्यमिक शिक्षाबोर्ड की सैकण्डरी परीक्षा ($10^{th}$) अथवा नौवीं की अंकसूची की सत्यापित प्रतिलिपि सहित 30 अपैल तक कार्यालय में भेजें। यदि 10 वीं का परीक्षा परिणाम घोषित नहीं हुआ हो तो नौवीं कक्षा की अंकसूची की प्रतिलिपि ही संलग्न करें।

2. छात्रों को संस्था द्वारा आयोजित शिविर में प्रशिक्षण एवं साक्षात्कार (इन्टरव्यू) के लिए पूरे दिन उपस्थित रहना आवश्यक है। **इस वर्ष यह शिविर दिनांक 9 मई से 26 मई 2004 तक देवलाली, नासिक (महा.) में आयोजित होगा।** प्रशिक्षण शिविर के दौरान ही छात्र के परीक्षाफल का प्रतिशत, प्रतिभा, चाल-चलन, धार्मिक रुचि व साक्षात्कार के आधार पर विद्यालय में प्रवेश हेतु छात्र का चयन किया जायेगा।

3. प्रवेश प्राप्ति की सूचना मिलने पर निर्दिष्ट तिथि को जयपुर आना अनिवार्य है।

---

## प्रवेश-स्वीकृति पत्र

**छात्र**........................................................................ **को सत्र** ............ **हेतु कक्षा** ......................

**में प्रवेश स्वीकृत/अस्वीकृत किया जाता है।**

**दिनांक :** **ह. महामंत्री** .................... **ह. प्राचार्य** ..................

**(पृष्ठ 2 का शेष ...)**

अपने आत्मा के असंख्यप्रदेशों तक ही सीमित है। इसप्रकार अर्थसमय का क्षेत्र ज्ञानसमय की अपेक्षा बड़ा है; फिर भी ज्ञान की पर्याय लोकालोक का ज्ञान कर लेती हैं; अतः ज्ञानसमय की महत्ता विशेष है।

सम्यग्ज्ञान की एकसमय की पर्याय में जब इतनी ताकत है तो फिर केवलज्ञान की कितनी ताकत होगी ? वह तो अनन्त को एकसमय में प्रत्यक्ष जान लेता है; परन्तु यहाँ छद्मस्थ के ज्ञानसमय की बात है।

एक ज्ञानगुण की एकसमय की पर्याय की इतनी ताकत है तो फिर वह पर्याय जिसके आश्रय से प्रगट होती है, ऐसे अनन्त गुणों के भण्डार आत्मद्रव्य की क्या बात करना ! अहो ! मेरा ज्ञानस्वभाव इतनी महिमावाला है। इसप्रकार जिसे अपने ज्ञानस्वभावी आत्मा की महिमा आती है, उसे सम्यग्ज्ञान प्रगट होता है और वह सभी पदार्थों को यथार्थ जान लेता है तथा क्रमश: वीतरागता प्रगट करके केवलज्ञान प्राप्त करता है।

द्रव्य-आगम (द्रव्यसमय) का ज्ञान भाव-आगम (ज्ञानसमय) से होता है। भाव-आगम का उत्पाद मिथ्यात्व के नाश से होता है। मिथ्यात्व का नाश ज्ञानस्वभावी आत्मा के आश्रय से होता है और वह भाव-आगम सभी पदार्थों को जान लेता है। इसप्रकार ज्ञानसमय शब्दसमय तथा अर्थसमय ह्न दोनों को जानता है; अत: ज्ञानस्वभाव की महिमा है। भावश्रुत-ज्ञान से ही पंचास्तिकाय समझ में आते हैं।

## श्री टोडरमल स्मारक भवन में
# विदाई समारोह सानन्द सम्पन्न

**जयपुर :** श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी रविवार, दिनांक 28 फरवरी 2004 को शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्रों द्वारा शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों को भावभीनी विदाई दी गई।

इस अवसर पर शास्त्री अन्तिम वर्ष के विद्यार्थियों में से सौरभ जैन, प्रयंक जैन, ज्ञायक जैन, पराग महाजन, नयनेश जैन एवं हर्षदभाई पांचाल ने समस्त विद्यार्थियों की ओर से महाविद्यालय में व्यतीत पाँच वर्ष के कार्यकाल एवं अपनी भावी योजनाओं के सम्बन्ध में विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि दि. जैन आचार्य संस्कृत कॉलेज के प्राचार्य डॉ. शीतलचन्द जैन तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, प्रो. सतीशजी कपूर, पण्डित श्रेयांसकुमारजी, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पार्षद श्रीमती स्नेहलता शाह आदि मंचासीन थे।

कार्यक्रम के अन्त में शास्त्री अन्तिम वर्ष के विद्यार्थियों को माल्यार्पण, तिलक लगाकर, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन राहुल जैन बिनोता, अभिषेक जैन सिलवानी एवं आशीष जैन जबेरा ने किया। **ह्न राहुल जैन**

# पंचास्तिकायसंग्रह : पद्यानुवाद

**ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल**

**शतइन्द्र वन्दित त्रिजगहित निर्मल मधुर जिनके वचन।**
**अनन्त गुणमय भवजयी जिननाथ को शत-शत नमन ।।1।।**
**सर्वज्ञभाषित भवनिवारक मुक्ति के जो हेतु हैं।**
**उन जिनवचन को नमन कर मैं कहूँ तुम उनको सुनो।।2।।**
**पञ्चास्तिकाय समूह को ही समय जिनवर ने कहा।**
**यह समय जिसमें वर्तता वह लोक शेष अलोक है।।3।।**
**आकाश पुद्गल जीव धर्म अधर्म ये सब काय हैं।**
**ये हैं नियत अस्तित्वमय अरु अणुमहान अनन्य हैं।।4।।**
**अनन्यपन धारण करें जो विविध गुण पर्याय से।**
**उन अस्तिकायों से अरे त्रैलोक यह निष्पन्न हैं।।5।।**
**त्रिकालभावी परिणमित होते हुए भी नित्य जो।**
**वे पंच अस्तिकाय वर्तनलिंग सह षट् द्रव्य हैं।।6।।**
**परस्पर मिलते रहें अरु, परस्पर अवकाश दें।**
**जल-दूध वत् मिलते हुए, छोड़ें न स्व-स्व भाव को।।7।।**
**सत्ता जनम-लय-ध्रौव्यमय अर, एक सप्रतिपक्ष है।**
**सर्वार्थ थित सविश्वरूप-रु, अनन्त पर्ययवंत है।।8।।**
**जो द्रवित हो अर प्राप्त हो सद्भाव पर्ययरूप में।**
**अनन्य सत्ता से सदा ही वस्तुत: वह द्रव्य है।।9।।**
**सद् द्रव्य का लक्षण कहा उत्पाद व्यय ध्रुव रूप वह।**
**वही आश्रय कहा है जिन गुणों अर पर्याय का।।10।।**

# मूर्तियाँ चोरी

**भीलवाड़ा (राज.) :** श्री दिगम्बर जैन बडा मन्दिर अजमेरा की गोठ भीलवाड़ा में दिनांक 18 फरवरी की रात्रि को अष्ट धातु की पाँच प्रतिमायें, सिद्ध भगवान की प्रतिमा, गंधगुटी, चाँदी का सिंहासन, छत्र, यंत्र, चंवर आदि उपकरण चोरी चले गये। गुप्त दान की दो गोलकें भी तोड़कर सारी रकम चोरी हो गई। इसी मंदिरजी से पाँच वर्ष पूर्व भी इसीप्रकार की एक घटना घटित हुई थी। समाज में भारी असन्तोष व्याप्त है। **ह्न पदमकुमार अजमेरा**

**आगामी कार्यक्रम...**

# शिखर शिलान्यास महोत्सव

**द्रोणगिरि (छतरपुर):** श्री गुरुदत्त-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट, द्रोणगिरि द्वारा निर्माणाधीन सिद्धायतन पर दिनांक 26 अप्रैल 2004 को शिखर शिलान्यास का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

इस अवसर पर 24 अप्रैल से 26 अप्रैल 2004 तक श्री सम्मेदशिखर मंडल विधान का आयोजन भी किया जायेगा तथा दिनांक 20 से 26 अप्रैल 2004 तक बुन्देलखण्ड प्रान्त के आसपास लगभग 25 स्थानो पर ग्रुप शिविर का आयोजन भी किया जा रहा है। **ह्न मस्ताई प्रेमचन्द जैन**

तत्वचर्चा

## प्रवचनसार का सार 3

- डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

जो लोग 'चारित्तं खलु धम्मो' का नारा लगाकर हमसे यह कहना चाहते हैं कि हममें चारित्र नहीं है; उन लोगों की दृष्टि में बाह्य क्रियाकाण्ड ही चारित्र है; लेकिन आचार्य कुन्दकुन्द चारित्र की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि **जो साम्यभाव अर्थात् समताभाव है, वही चारित्र है, वही धर्म है।**

इस पर कई व्यक्ति कहते हैं कि हममें समताभाव तो बहुत है। हमें तो ग्राहक चार गालियाँ भी सुना जाते हैं तो भी हम ग्राहक से कुछ नहीं कहते। हम तो हाथ ही जोड़ते रहते हैं।

उससे कहते हैं कि भाई ! यह समताभाव नहीं है, यह तो लोभ की तीव्रता का परिणाम है; समताभाव तो मोह व क्षोभ से रहित आत्मा के परिणाम को कहते हैं।

**मोह में दर्शनमोहनीय एवं क्षोभ में राग व द्वेष लेना। इसप्रकार मिथ्यात्व व राग-द्वेष से रहित जो आत्मा का परिणाम है, वह साम्यभाव है। ऐसा साम्यभाव ही चारित्र है, धर्म है।**

उस चारित्र में, जिसे धर्म कहा गया है; सम्यग्दर्शन शामिल है। यदि कुन्दकुन्दाचार्य मात्र 'राग-द्वेष-विहीणो परिणामो अप्पणो हु समो।' ह्न ऐसा लिखते तब हम कह सकते थे कि उन्होंने मात्र चारित्रमोह को लिया है, दर्शनमोह को नहीं लिया; परन्तु उन्होंने तो **मोहक्खोहविहीणो** लिखकर मोह शब्द से मिथ्यात्व और क्षोभ शब्द से राग-द्वेष लेकर मिथ्यात्व व राग-द्वेष से रहित परिणाम को चारित्र घोषित किया है।

**श्रद्धा गुण का निर्मल परिणाम सम्यग्दर्शन, ज्ञान गुण का निर्मल परिणाम सम्यग्ज्ञान तथा चारित्रगुण का निर्मल परिणाम सम्यक्-चारित्र ह्न इन तीनों को आचार्यदेव साम्य कहते हैं और यही साक्षात्-धर्म है। यहाँ सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र इन तीनों के सम्मिलित रूप को ही धर्म घोषित किया है, अकेले चारित्र को नहीं।**

इसी भाव को आचार्य समन्तभद्र रत्नकरण्डश्रावकाचार में इसप्रकार स्पष्ट करते हैं ह्न

**सद्दृष्टिज्ञानवृत्तानि धर्मं धर्मेश्वरा विदुः।**
**यदीयप्रत्यनीकानि भवन्ति भवपद्धतिः।।**

धर्म के ईश्वर ने सद्दृष्टि अर्थात् सम्यग्दर्शन, सद्ज्ञान अर्थात् सम्यग्ज्ञान एवं सद्वृत्त अर्थात् सम्यक्चारित्र को धर्म कहा है।

बाहर से तो मात्र चारित्र ही दिखाई देता है। एक चक्रवर्ती को क्षायिक सम्यग्दर्शन हो गया है; परन्तु बाहर से कुछ भी दिखाई नहीं देता। अंतर में उसकी श्रद्धा, उसका अपनत्व परपदार्थों से हटकर त्रिकाली ध्रुव भगवान आत्मा में हो गया है। ऐसा होने पर भी वर्तमान में उन्होंने राज-पाट नहीं छोड़ा है, 96000 पत्नियों में से एक को भी नहीं छोड़ा है। वे दिग्विजय करने के लिए जा रहे हैं। यह सब देखकर लोक कैसे समझें कि वे धर्मात्मा हैं। यदि आचार्य मात्र श्रद्धा को ही धर्म घोषित करते तो फिर विषय-कषाय में लिप्त लोगों को भी धर्मात्मा समझ लिया जाता।

जादू तो वह है जो सिर पर चढ़कर बोले। चारित्र एक ऐसी चीज है जो संपूर्ण जगत को दिखाई देती है। मैं सम्यग्दृष्टि हूँ या नहीं हूँ ह्न लोगों को इसकी घोषणा करने की जरूरत पड़ती होगी; परन्तु किसी ने नग्नदिगम्बर दीक्षा ले ली तो उन्हें यह कहने की जरूरत नहीं है कि मैं साधु हूँ। उनका वेष ही सबकुछ कह देता है।

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप पर्याय से परिणत त्रिकालीध्रुव आत्मा ही धर्मात्मा है। यहाँ यदि अकेले त्रिकाली ध्रुव आत्मा को ही धर्म कहते तो निगोदिया आत्मा भी धर्मात्मा हो जाता। इसका अर्थ यह है कि यहाँ धर्मात्मा शब्द पर्याय की अपेक्षा है, द्रव्य की अपेक्षा नहीं।

इस बात की चर्चा आचार्यदेव इस गाथा में करते हैं ह्न

**परिणमदि जेण दव्वं तक्कालं तम्मयं त्ति पण्णत्तं।**
**तम्हा धम्मपरिणदो आदा धम्मो मुणेयव्वो।।8।।**

( हरिगीत )

**जिसकाल में जो दरव जिस परिणाम से हो परिणमित।**
**हो उसीमय वह धर्मपरिणत आतमा ही धर्म है।।8।।**

द्रव्य जिस समय जिस भाव से परिणत होता है, उस समय वह उस रूप ही होता है ह्न ऐसा जिनेन्द्र भगवान ने कहा है; अतः धर्मपरिणत आत्मा को धर्म ही मानना चाहिए।

अरे, भाई ! जलता हुआ ईंधन; ईंधन नहीं, अग्नि है। हम कहते हैं कि यह आग है..दूर रहो; इससे यह स्पष्ट है कि जिस पर्याय से जो परिणमित होता है; वह वही है। इसलिए धर्म पर्याय से परिणत आत्मा ही धर्म है।

धर्म अर्थात् चारित्र। चारित्र अर्थात् सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र। इन तीनों से परिणमित आत्मा ही धर्मात्मा है। धर्मात्मा नहीं, अपितु साक्षात् धर्म है, जैसाकि रत्नकरण्डश्रावकाचार में कहा है ह्न

**न धर्मो धार्मिकै बिना।**

धर्म धर्मात्माओं के बिना नहीं होता। यहाँ आचार्यदेव यह कह रहे हैं कि धर्मात्मा ही धर्म है; क्योंकि इसके अतिरिक्त कोई धर्म है ही नहीं।

क्या ईंधन अलग एवं अग्नि अलग ह्न ऐसा माना जा सकता है? क्या किसी ने ईंधन के बिना अग्नि देखी है ? कहीं ईंधन के बिना अग्नि हो तो बताइए। जहाँ भी अग्नि का अस्तित्व है, वहाँ वह जलती ही दिखाई देगी।

ऐसे ही यदि धर्म से परिणत आत्मा को ही वास्तविक धर्म नहीं कहेंगे तो फिर जगत में धर्म का अस्तित्व ही नहीं होगा; क्योंकि धर्म का वास्तविक स्थान ही आत्मा है। अतः धर्म से परिणत आत्मा ही धर्म है।

इसी मर्म को आचार्य दसवीं गाथा में भी उद्घाटित करते हैं ह्न

**णत्थि विणा परिणामं अत्थो अत्थं विणेह परिणामो।**
**दव्वगुणपज्जयत्थो अत्थो अत्थित्तणिव्वत्तो।।10।।**

( हरिगीत )

**परिणाम बिन ना अर्थ है अर अर्थ बिन परिणाम ना।**
**अस्तित्वमय यह अर्थ है बस द्रव्यगुणपर्यायमय।।10।।**

इस लोक में पर्याय के बिना पदार्थ और पदार्थ के बिना पर्याय नहीं होती। द्रव्य-गुण-पर्याय में रहनेवाला पदार्थ अस्तित्व से बना हुआ है।

यदि धर्म को त्रिकाली ध्रुव भगवान आत्मा से सर्वथा अलग कर दें तो

धर्म तो सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप परिणमन है एवं उसके कारण ही आत्मा को धर्म कहा है। इसप्रकार यदि धर्मपर्याय को आत्मा से सर्वथा भिन्न कहेंगे तो फिर आत्मा को धर्म कहना ही संभव नहीं होगा।

**प्रश्न ह्व** पहले तो आपने यह कहा था कि त्रिकाली ध्रुव और पर्यायें भिन्न-भिन्न हैं एवं अभी यह कह रहे हैं,........ ?

यद्यपि देह और आत्मा ये दोनों पृथक् ही हैं; तथापि हमें जितने भी जीव दिखाई देते हैं; वे सब देह में ही दिखाई देते हैं। इसीकारण संसारी जीव को देही कहा जाता है। यद्यपि सिद्ध भगवान देह रहित हैं, तथापि वे हमारे ज्ञान के प्रत्यक्ष ज्ञेय नहीं बनते।

ऐसे ही पर्याय व द्रव्य भिन्न-भिन्न हैं। शरीर तो सिद्धावस्था में भिन्न हो जायेगा; पर ये पर्यायें तो सिद्धावस्था में भी रहेंगी; एक समय को भी भिन्न नहीं होगी; फिर भी हमारे ज्ञान के द्वारा आत्मद्रव्य और उनकी पर्यायों को भिन्न-भिन्न जाना जा सकता है, जाना जाता है; इसलिए उन्हें भिन्न कहते हैं एवं उन पर से दृष्टि हटाने के लिए कहते हैं। पर्यायें तो हटनेवाली नहीं है; परन्तु पर्यायों से दृष्टि हटाकर स्वभाव पर दृष्टि ले जाने के लिए ऐसा कहा जाता है। यदि कोई इसका अर्थ पर्याय से सर्वथा भिन्न समझ ले तो वह सही नहीं है। इस सन्दर्भ में 11वीं गाथा उल्लेखनीय है ह्व

**धम्मेण परिणदप्पा अप्पा जदि सुद्धसंपयोगजुदो।**
**पावदि णिव्वाणसुहं सुहोवजुत्तो य सग्गसुहं॥11॥**

( हरिगीत )

**प्राप्त करते मोक्षसुख शुद्धोपयोगी आतमा।**
**पर प्राप्त करते स्वर्गसुख हि शुभोपयोगी आतमा॥11॥**

धर्मपरिणत आत्मा यदि शुद्धोपयोगी होता है तो मोक्षसुख प्राप्त करता है तथा यदि शुभोपयोगी होता है तो स्वर्ग-सुख प्राप्त करता है।

अमृतचन्द्राचार्य इसकी टीका में लिखते हैं कि हे जीव! तू स्वर्गसुख की बात सुनकर लोभ मतकर। अग्नि में तपे हुए घी को मनुष्य पर डालने से उसे जलन सम्बन्धी जैसा दुःख होता है ह्व वैसा ही स्वर्गसुख है।

अज्ञानी सोचता है कि मिलना तो सुख ही सुख है। निर्वाणसुख मिलेगा, नहीं तो स्वर्गसुख तो मिलेगा ही, कुछ न कुछ तो मिलेगा। यह नहीं समझता कि वह स्वर्गसुख सुख नहीं, दुःख ही है।

अब यहाँ यह अत्यंत विचारणीय है कि यदि अमृतचन्द्र जैसे सशक्त आचार्य नहीं होते तो क्या किसी अन्य में ऐसा मर्म उद्घाटित करने की ताकत थी ? गाथा में तो लिखा है सग्गसुहं और उन्होंने उसकी ऐसी व्याख्या की है कि वह सुख है ही नहीं, दुःख ही है।

आगे स्वयं आचार्य कुन्दकुन्द सुखाधिकार में स्वर्गसुख की इसीप्रकार व्याख्या करते हैं।

अत: यह सहजसिद्ध ही है कि अमृतचन्द्र ने जो अर्थ किया है, वह कुन्दकुन्द की भावना के अनुरूप ही है।

इसप्रकार आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने प्रारम्भिक 12 गाथाओं में संपूर्ण ग्रंथ की भूमिका प्रस्तुत की। अब आगामी गाथाओं से शुद्धोपयोग अधिकार प्रारंभ करते हैं। ●

# दूसरा प्रवचन

प्रवचनसार के ज्ञानतत्त्वप्रज्ञापन की प्रारंभिक 12 गाथाओं में मंगलाचरण के उपरान्त आचार्यदेव ने यह बताया है कि वास्तव में चारित्ररूप धर्म से परिणमित आत्मा ही धर्मात्मा है; इसलिए साक्षात्रूप से चारित्र ही धर्म है और **मोह व क्षोभ से रहित आत्मा का समताभावरूप परिणाम ही चारित्र है। इससे यह स्पष्ट है कि बाह्य क्रियाकाण्ड, जिसे यह जगत चारित्र माने बैठा है, वह चारित्र नहीं है।**

आत्मा का धर्म तो आत्मा में ही होना चाहिए; बाह्य क्रियाकाण्ड से उसका क्या सम्बन्ध ? यदि यह क्रियाकाण्ड या सद्व्यवहार ही चारित्र हो तो जो शुद्धोपयोगी हैं, जो सारे व्यवहार से अतीत हो गए हैं; उनमें यह क्रियाकाण्डरूप चारित्र नहीं पाये जाने से जो सबसे बड़े चारित्रवाले हैं; उन्हें हम चारित्र से हीन ही मान लेंगे।

13 वीं गाथा से 20 वीं गाथा तक आचार्यदेव शुद्धोपयोग अधिकार की चर्चा करते हैं। वैसे तो यह चर्चा 11वीं गाथा में ही प्रारंभ हो गई; जहाँ शुद्धोपयोग का फल निर्वाणसुख तथा शुभोपयोग का फल स्वर्गसुख बताया है। स्वर्गसुख में भी विषयचाहदवदाहदुःख का ही अनुभव होता है, विषयों की आकुलता का ही अनुभव होता है; निराकुलता का अनुभव नहीं होता।

**स्वर्गसुख का तो नाममात्र सुख है; वस्तुतः वह सुख नहीं है। वास्तविक सुख तो शुद्धोपयोग के फल में प्राप्त होनेवाला सुख ही है।** उसके बारे में आचार्य कहते हैं ह्व

**अइसयमादसमुत्थं, विसयातीदं अणोवममणंतं।**
**अव्वुच्छिण्णं च सुहं, सुद्धवओगप्पसिद्धाणं॥13॥**

( हरिगीत )

**शुद्धोपयोगी जीव के है अनूपम आत्मोत्थसुख।**
**है नंत अतिशयवंत विषयातीत अर अविछिन्न है॥13॥**

शुद्धोपयोग से प्रसिद्ध जीवों के अतिशय, आत्मोत्पन्न, विषयातीत, अनुपम, अनन्त और अखण्डित सुख होता है।

शुद्धोपयोग ही साक्षात्धर्म है और उसका फल निराकुल सुख है। उस जाति के सुख की महिमा छहढाला में भी गाई गई है, जो इसप्रकार है ह्व

**यो चिन्त्य निज में थिर भये, जिन अकथ जो आनन्द लह्यो।**
**सो इन्द्र नाग नरेन्द्र वा, अहमिन्द्र के नाहीं कह्यो॥**

शुद्धोपयोगी संतों का स्वरूप 14वीं गाथा में इसप्रकार समझाया गया हैह्व

**सुविदिदपयत्थसुत्तो, संजमतवसंजुदो विगदरागो।**
**समणो समसुहदुक्खो, भणिदो सुद्धोवओगो त्ति॥14॥**

( हरिगीत )

**हो वीतरागी संयमी तपयुक्त अर सूत्रार्थ विद्।**
**शुद्धोपयोगी श्रमण के समभाव भवसुख-दुक्ख में॥14॥**

पदार्थों और सूत्रों को अच्छी तरह जाननेवाले, संयम और तप संपन्न, रागादि से रहित, सुख-दुःख में समभावी श्रमण शुद्धोपयोगी कहे गये हैं।

**(क्रमशः)**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

**पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल** द्वारा विरचित तीर्थंकर स्तवन क्रमश: यहाँ दिया जा रहा है ह्न

### 16. श्री शान्तिनाथ स्तवन

**निज स्वरूप सरवर में जिनवर, नियमित नित्य नहाते हो।**
**अपने दिव्य बोधि के द्वारा, विषय-विकार बुझाते हो।।**
**परम शान्त मुद्रा से मुद्रित, शान्ति-सुधा बरसाते हो।**
**परम शान्ति हेतु होने से, शान्तिनाथ कहलाते हो।।**

### 17. श्री कुन्थुनाथ स्तवन

**देवेन्द्रचक्र से चयकर प्रभु ने, पुनर्जन्म का अन्त किया।**
**राजेन्द्रचक्र को त्याग कुन्थु ने, मुक्तिमार्ग स्वीकार किया।**
**धर्मेन्द्रचक्र को धारण कर, जिनशासन का विस्तार किया।**
**सिद्धचक्र में शामिल होकर, निजानन्द रसपान किया।।**

### 18. श्री अरनाथ स्तवन

**हे अरनाथ ! जिनेश्वर तुमने, छह खण्ड छोड़ वैराग्य लिया।**
**चक्र-सुदर्शन त्यागा तुमने, धर्मचक्र शिर धार लिया।।**
**सिद्धचक्र के साधनार्थ प्रभु! सकल परिग्रह त्याग दिया।**
**शुक्लध्यान की सीढ़ी चढ़, सुखमय अर्हत्पद प्राप्त किया।।**

### 19. श्री मल्लिनाथ स्तवन

**हे मल्लिनाथ ! तुम परमपुरुष हो, मंगलमय हो प्रभुवर आप।**
**भक्तिभावना से हे भगवन! भक्तजनों के कटते पाप।।**
**प्रभो! आपका भक्त कभी भी, अधोगति नहीं जाता है।**
**निजस्वभाव को पाकर प्रभुवर, शीघ्र मुक्तिपद पाता है।।**

### 20. श्री मुनिसुव्रतनाथ स्तवन

**मिथ्यादर्शन-क्रोध-मान को, दु:खद बताया हे जिननाथ!**
**माया-लोभ कषाय पाप का, बाप बताया सुव्रतनाथ।।**
**शरण आपकी पाने से, भविजन होते भव सागर पार।**
**हे मुनिसुव्रतनाथ ! आपको, वन्दन करते सौ-सौ वार।।**

**ह्न यह 'तीर्थंकर स्तवन' पुस्तक रूप में भी उपलब्ध है।**

## तमिलनाडू में धर्म प्रभावना

**कीलसात्तमंगलम् (तिरुवन्नामलई) :** आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर की ओर से यहाँ दिनांक 21-22 फरवरी को श्री चन्द्रप्रभस्वामी दिग. जैन मंदिर में द्विदिवसीय शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें पण्डित एल. नाभिराजनजी, पण्डित बालाजी शास्त्री एवं स्थानीय विद्वान एस. पदमकुमारजी द्वारा विद्यार्थियों को बालबोध पाठमाला के माध्यम से जैन सिद्धान्तों का ज्ञान कराया गया। **– डॉ. दिनेशचन्द्र शाह**

## प्राप्त दान राशि

डॉ. वासन्तीबेन शाह मुम्बई की ओर से अजमेर में आयोजित समयसार मण्डल विधान के उपलक्ष में जैनपथप्रदर्शक समिति को 501/- रुपये प्राप्त हुये हैं; आपको जैनपथप्रदर्शक समिति की ओर से धन्यवाद ज्ञापित करते हुये हम आशा करते हैं कि भविष्य में भी इसीतरह आपका सहयोग हमें प्राप्त होता रहेगा।

## सत्साहित्य नि:शुल्क मँगा ले।

आध्यात्मिक रुचि सम्पन्न **पण्डित नेमीचन्दजी पाटनी** आगरा द्वारा लिखित 11 पुस्तकों का सैट, जिसके कुल पृष्ठ 586 हैं और मूल्य 48/- रुपये है को श्री मगनमल सौभागमल पाटनी चैरीटेबल ट्रस्ट, मुम्बई की ओर से मन्दिरों, संस्थाओं, त्यागियों, मुमुक्षुओं को स्वाध्यायार्थ नि:शुल्क भेंट स्वरुप भेजा जा रहा है।

इच्छुक महानुभाव निम्न पतेपर डाक खर्च के लिए फ्रेश डाक टिकिट **रुपये 8/- (आठ रुपये)** भेजकर मंगा लेवे। **डाक टिकिट भेजने की अन्तिम तिथि 31 मई 2004 है।**

**पता ह्न** प्रबंधक, नि:शुल्क साहित्य वितरण विभाग
श्री टोडमल स्मारक भवन, ए-4 बापूनगर
जयपुर (राज.) 302015

## परीक्षा सामग्री शीघ्र भेजें

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड ए-4 बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) की शीतकालीन परीक्षाएँ 30 व 31 जनवरी तथा 1 फरवरी 2004 को सम्पन्न हो चुकी है। जिन परीक्षा केन्द्र ने छात्रों की उत्तरपुस्तिकाऐं एवं मौखिक परीक्षा की रिपोर्ट अभी तक नहीं भेजी हैं, वे 25 मार्च तक जयपुर-कार्यालय अवश्य भेज दें। **– प्रबन्धक, परीक्षा विभाग**

## वैराग्य समाचार

1. अलवर निवासी श्री दयाचन्दजी जैन का 62 वर्ष की उम्र में दिनांक 1 मार्च 2004 को देहावसान हो गया है। आप अत्यन्त स्वाध्यायी एवं सरल स्वभावी थे। पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा प्रसारित तत्त्वज्ञान को प्राप्त करने हेतु अनेक बार सोनगढ़ एवं जयपुर शिविरों में जाया करते थे। जिससे आपका सम्पूर्ण जीवन ही अध्यात्ममय बन गया था।

आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक समिति को 250/-रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

2. जोधपुर निवासी गोडीचन्दजी भीमराजजी मेहता का 78 वर्ष की आयु में जनवरी माह में देहावसान हो गया है। आपकी स्मृति में आपके परिवार की ओर से वीतराग-विज्ञान को 200/-रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही मंगल कामना है।

**जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) मार्च (द्वितीय) 2004**

**J. P.C. 3779/02/2003-05**

**प्रति,**

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए. जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास ❋ **पं. जितेन्द्र वि.राठी शास्त्री**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

*यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें –*
ए- 4 बापूनगर, जयपुर – 302015 (राज.)
**फोन :** (0141) 2705581, 2707458
**तार :** त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127